Course code	Prakrit Epic Literature, Paper – I, (Core Course – 9A)	L	T	P	C
BJAPR20Y201	प्राकृत काव्य साहित्य, प्रश्न पत्र –1	3	2	0	5
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		50 Marks			

Course Objectives:

- प्राकृत काव्यों के इतिहास की व्यापक जानकारी देना।
- प्राकृत काव्य साहित्य के अध्ययन के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- प्राकृत से शिक्षा ग्रहण करने की प्रवृत्ति विकसित करना।
- भाषा कुशलता एवं दक्षता विकसित करना।

Course Outcome:

- काव्य–क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान होना।
- प्राकृत काव्य साहित्य की महत्ता का पता चलना।
- काव्य के इतिहास और परम्परा का ज्ञान होना।
- प्राकृत भाषा की विविधताओं की समझ विकसित होना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- छात्रों में काव्य–कौशल का विकास होना।
- काव्य की विषय–वस्तु के अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- काव्य के अध्ययन के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का ज्ञान होना।
- व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।

Unit-I	15

प्राकृत के महाकाव्य –

- महाकाव्यों के अध्ययन की अवश्यकता।
- प्राकृत महाकाव्य का उद्‌भव।
- प्राकृत महाकाव्य का विकास।
- प्राकृत महाकाव्य का महत्त्व।
- प्राकृत के महाकाव्यों की प्रमुख विशेषताएँ!

Unit -2	15

प्राकृत के प्रमुख महाकाव्य और उनके रचनाकार महाकवि–

- सेतुबन्ध – प्रवरसेन।
- गउडवहो – वाक्पतिराज।
- लीलावईकहा – कोऊहल।
- द्वयाश्रय काव्य – आचार्य हेमचन्द्र।

Unit-3	15

प्राकृत के प्रमुख खण्डकाव्य–

- कंसवहो।
- उसानिरुद्धम्।
- रामपाणिवाद।

Unit-4	**15**

प्राकृत के प्रमुख चरित काव्य –

- पउमचरियं
- सुदंसणाचरियं
- सुरसुन्दरीचरियं
- महावीरचरियं
- सुपासनाहचरियं

प्राकृत के प्रमुख मुक्तक काव्य –

- गाहासत्तसई
- वज्जालग्गं

Unit-5	**15**

- सेतुबन्ध–प्रवरसेन प्रथम (आश्वास)

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures			

Text/Reference Books

1. प्राकृत साहित्य का इतिहास– डॉ. जगदीशचंद्र जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1961
2. प्राकृत–गद्य–पद्य–बंध – प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान वैशाली, (बिहार), 2017
3. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा बुक, ऐजन्सी, वाराणसी।
4. शौरसेनी प्राकृत व्याकरण – डॉ. उदयचन्द्र जैन।
5. प्राकृत–बोध – आचार्य सुनील सागर, जैन संस्कृति शोध संस्थान, इन्दौर।
6. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण – रिचार्ड पिशेल, हिन्दी अनुवाद – हेमचन्द्र जोशी, प्रकाशक – बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना (बिहार)।
7. उषानिरुद्धम् – सम्पादक : प्रो. ऋषभचन्द्र जैन 'फौजदार', निदेशक, प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान वैशाली, (बिहार), 2014।
8. गाहासत्तसई – पं. विश्वनाथ पाठक, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी।
9. सेउवह महाकव्वं – श्री प्रवरसेनकृत, सम्पादक : डॉ. हरिशंकर पाण्डेय, शारदा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 2006।
10. सेतुबन्ध (हिन्दी अनुवाद) – डॉ. रघुवंश, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

Ashisha

Course code	Prakrit Katha Sahitya, Paper –II, (Core Course – 9B)	L	T	P	C
BJAPR20Y202	प्राकृत कथा साहित्य, प्रश्न पत्र –2	3	2	0	5
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		50 Marks			

Course Objectives:

- प्राकृत कथाओं के इतिहास की व्यापक जानकारी देना।
- छात्रों में कथा साहित्य के अध्ययन के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- प्राकृत भाषा के अभ्यास के प्रवृत्ति विकसित करना।
- भाषा कुशलता एवं दक्षता विकसित करना।

Course Outcome:

- कथा कहने की विशेषताओं का ज्ञान होना।
- प्राकृत कथा लेखन की दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का पता चलना।
- प्राकृत कथाओं के इतिहास और परम्परा का ज्ञान होना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- कथा कौशल का विकास होना।
- कथा के अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- कथा साहित्य के अध्ययन हेतु नूतन तकनीक, कौशल विधियाँ एवं प्रयोगों का ज्ञान होना।
- कथा के माध्यम से समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।

Unit-I	15

कथा का उद्भव–विकास–

- कथा की परम्परा।
- भारतीय कथा साहित्य।

प्राकृत कथा साहित्य–

- उद्भव
- विकास
- महत्त्व।

Unit -2	15

प्राकृत के प्रमुख कथा ग्रन्थों का परिचय। • वसुदेवहिण्डी • तंरगवइकहा • समराइच्चकहा • लीलावईकहा • कुवलयमाला • नम्मयासुंदरीकहा।	
Unit-3	**15**
प्राकृत के प्रमुख कथाकार – • संघदासगणि • पादलिप्तसूरि • हरिभद्रसूरि • कोऊहल। • उद्द्योतनसूरि • महेन्द्रसूरि।	
Unit-4	**15**
• समराइच्चकहा (आचार्य हरिभद्र सूरि) प्रथम भव।	
Unit-5	**15**
• ज्ञाताधर्म कथा – 1–3 अध्ययन।	

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures		
Text/Reference Books		
	1. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी। 2. प्राकत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीशचन्द्र जैन, चौखम्बा, विद्या भवन, वाराणसी। 3. समराइच्चकहा – सं. पं. छगनलाल शास्त्री, अ. भा. सा. जैन संघ, बीकानेर। 4. समराइच्चकहा – सम्पादन एवं अनुवाद डॉ. रमेशचन्द्र जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली। 5. समराइच्चकहा का सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. झिनकू यादव। 6. ज्ञाताधर्म कथांगसूत्र – पं. शोभाचन्द्र भारिल्ल, आगम प्रकाशन समिति, व्यावर।	